RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 79 - 81
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में चित्रित राम–कथा

अन्जु शर्मा
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
एस.एस.डी.पी.सी.पी.जी. कॉलेज,
रूड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

Received : 24/03/2017 *1st BPR* : 25/03/2017 *2nd BPR* : 30/03/2017 *Accepted* : 06/04/2017

ABSTRACT

डॉ0 नरेन्द्र कोहली जी बहुआयामी प्रतीभा के धनी साहित्यकार हैं। आपने हिन्दी की विविध विधाओं पर कार्य किया है। आप अपनी तीन कृतियों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए है पहली रामकथा पर आधारित अभ्युदय, दूसरी महाभारत पर आधारित महासमर और तीसरी स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन पर आधरित तोड़ो कारा तोड़ो। उनकी उपन्यासों की श्रृंखलाओं ने साहित्य जगत को समृद्ध बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। कहानी , व्यंग्य , उपन्यास , नाटक उनकी लगभग 84 से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। राम–कथा का गद्य माध्यम से प्रस्तुतीकरण वास्तव में डॉ0 कोहली जी की एक अद्भुत खोज है जिससे उन्हें समाज में अकल्पनीय लोकप्रियता प्राप्त हुई है। आपकी रामकथा पर आधारित उपन्यास–श्रृंखला में पाठकों को अतीत की घटनाओं से वर्तमान सन्दर्भों में नवीनता की प्राप्ति होती है। जो वास्तव में आपकी असाधारण विद्वता की परिचायक है। प्रस्तुत उपन्यास खण्डों के माध्यम से आपने मानव मन की गहराईयों को छूआ है। यही कारण है कि पाठकों ने भी हृदय खोलकर इनका साहित्य जगत में स्वागत किया है। उन्होंने पौराणिक सन्दर्भों को यथावत नहीं रखा है अपितु अपनी कल्पनाओं का सम्बल ले उन्हें वर्तमान के परिपेक्ष्य में उपस्थित करने का सतत प्रयास किया है। राम–कथा पर आधारित होने पर भी इनकी कृति आज की समसामयिक समस्याओं के इर्द–गिर्द घूमती प्रतीत होती है जो वास्तव में आधुनिक चेतना से सम्बद्ध है न कि युगों पुरानी पौराणिक संचेतना से।

डॉ0 नरेन्द्र कोहली जी बहुआयामी प्रतीभा के धनी साहित्यकार हैं। आप अब तक एक पौराणिक उपन्यासकार के रूप में स्थापित हो चुके हैं। किन्तु आपने हिन्दी की विविध विधाओं पर कार्य किया है। आप अपनी तीन कृतियों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए है पहली रामकथा पर आधारित अभ्युदय, दूसरी महाभारत पर आधारित महासमर और तीसरी स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन पर आधरित तोड़ो कारा तोड़ो। उनकी उपन्यासों की श्रृंखलाओं ने साहित्य जगत को समृद्ध बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। कहानी , व्यंग्य , उपन्यास , नाटक उनकी लगभग 84 से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी है। आपके द्वारा लिखित उपन्यास और कहानियाँ निम्नलिखित है–

उपन्यास :– आतंक, अभिज्ञान, साथ सहा गया दुःख, पुनरारम्भ, मेरा अपना संसार, जंगल की कहानी, अभ्युदय, महासमर, तोड़ो कारा तोड़ो।

कहानियाँ :– परिणति , कहानी का अभाव, दृष्टि में एकाएक, शटल, नमक का कैदी, निचले फ्लैट में, संचित भूख।

आपकी रामकथा पर आधारित उपन्यास–श्रृंखला में पाठकों को अतीत की घटनाओं से वर्तमान सन्दर्भों में नवीनता की प्राप्ति होती है। जो वास्तव में आपकी असाधारण विद्वता की परिचायक है। प्रस्तुत उपन्यास खण्डों के माध्यम से आपने मानव मन की गहराईयों को छूआ है। यही कारण है कि पाठकों ने भी हृदय खोलकर इनका साहित्य जगत में स्वागत किया है। उन्होंने पौराणिक सन्दर्भों को यथावत नहीं रखा है अपितु अपनी कल्पनाओं का सम्बल ले उन्हें वर्तमान के परिपेक्ष्य में उपस्थित करने का सतत प्रयास किया है। भगवान श्री राम की दीक्षा और प्रतिज्ञा पर केन्द्रित 'दीक्षा' कथा माला का प्रथम श्रद्धा सुमन है जिसके अन्तर्गत लेखक ने सत्य और न्याय की प्रतिष्ठा के लिए पतनशील समाज के स्थान पर नवीन समाज की स्थापना की है। प्रस्तुत उपन्यास को तेरह खण्डों में बाँटा गया है। उपन्यास का आरम्भ विश्वामित्र के पास पुर्नवसु के समाचार लाने से होता कि राक्षसों ने आश्रम पर आक्रमण कर दिया है। विश्वामित्र अत्यन्त चिन्तित स्वर में कहते हैं–''जनसामान्य का इस प्रकार भीरू हो जाना शोचनीय स्थिति है।''[1] ''न्याय पक्ष दुर्बल और भीरू हो गया है। अन्याय पक्ष दुस्साहसी तथा शक्तिशाली हो गया है। यह स्थिति अत्यन्त अहितकर है. ... ।''[2]

अतः विश्वामित्र चक्रवर्ती सम्राट दशरथ की जनसभा में जाकर लंकापति रावण , ताड़का उसके बेटे मारीच के वध हेतू राम कर

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 79-81 , ISSN 2348 – 3318
अन्जु शर्मा
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

सहायता मांगते है। वह दशरथ से कहते हैं–''सम्राट! मेरे यज्ञ की रक्षा के लिए, केवल दस दिनों की अवधि के लिए तुम अपने राम को मुझे दे दो।''[3]

युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय कौशल्या अत्यधिक दुःखी थी जिसे देखकर राम के अधरों पर एक वक्र सी मुस्कान उदित हुई और क्षण भर में ही विलीन हो गई। ''एक उपेक्षित माता के अनचाहे, सबकी आंखों में खटकने वाले पुत्र के विषय में यह मान लेना उचित नहीं है कि वह दुःख से अनभिज्ञ होगा, दूसरों के लिए करूणा से शून्य होगा और न्याय के लिए संघर्ष से उसका परिचय नहीं होगा।''[4] न्याय और अन्याय को परिभाषित करते हुए लक्ष्मण जी कहते हैं कि,''हमारे भैया कहते हैं, दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना न्याय है; और अपने स्वार्थों के प्रति लड़ना स्वार्थ है।''[5]

'अवसर' कथा–माला का द्वितीय पुष्प है जिसके अन्तर्गत लेखक ने समाज में प्रचलित रूढ़िवादी परम्पराओं एवं मान्यताओं का विरोध करते हुए समाज को प्रेरणा प्रदान की है। प्राचीन समय में व्याप्त नारी की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी जिसका सीता विरोध करती है। अतः राम जी उन्हें समझाते हुए कहते है कि,''ठीक कहती हो सीते ! तुम्हें अपने योग्य कार्य अवश्य मिलना चाहिए, अन्यथा तुम्हारी सारी समस्त ऊर्जा निष्क्रिय रहकर सड़ जाएगी। पर कठिनाई यह है , इस समाज ने मान लिया हैकि स्त्री घर से बाहर तभी कोई कार्य करेगी , जब पुरुष मृत , पंगु अथवा अनुपस्थित होगा।''[6]

माता कौशल्या व कुल वृद्धाएं विवाह के चार वर्ष पश्चात भी गोद न भरने पर सीता से नित्य इस विषय पर चर्चा करती है। जिससे वह असहज हो जाती है। उसकी मनोदशा पर विचार व्यक्त करते हुए लेखक कहते हैं,''कदाचित ये सारीकुल वृद्धाएं इतने अंतराल के पश्चात भी संतान न होने का दोष सीता की अक्षमता को देती होगीं। जिनके विचार–संसार में विवाह करके एक वर्ष के भीतर सन्तान उत्पन्न न करना वन्ध्या होने का प्रमाण–पत्र हो।''[7]

'संघर्ष की ओर' कथा–श्रृंखला की तृतीय कड़ी में पीड़ित नारी की मुक्ति, बुद्धिजीवियों के साथ के साथ गठजोड़ और अन्याय के विरूद्ध दलित वर्ग के संगठन को बेबाकी से चित्रित किया गया है। ऋषि शरभंग खान श्रमिकों की समस्या का समाधान नहीं कर पाते है और आत्मदाह कर लेते है। उनके विषय में ज्ञानश्रेष्ठ राम से कहते हैं कि ,''न्याय का क्या होगा... धनवान और सत्ताव ान तो पहले ही रक्तपान कर रहा है , बुद्धिजीवी भी उन्हीं के षडयन्त्र में सम्मिलित हो जाएगा तो फिर दुर्बल और असहाय मानवता का क्या होगा ? ये कर्मकर , ये श्रमिक , ये दास – ये इसी प्रकार मरते–खपते रहेंगे , पशुओं के समान जीवन काटेंगे ? मानव की श्रेणी में ये कभी नहीं आएंगे ? ...कभी नहीं ? शायद कभी नहीं ! कोई नहीं चाहता , ये मनुष्य का जीवन जीएं। रावण बुद्धिजीवियों को खा जाता है, इन्द्र इन्हें खरीद लेता है... तो कौन आएगा उनकी सहायता को कोई भी नहीं ? ... राम ! क्या राम ?''[8]

सक्षात्कार इस कथा–माला का चौथा सोपान है। लेखक ने इस उपन्यास में शूर्पणखा के षडयंन्त्र और सीताहरण का अत्यन्त मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। शूर्पणखा के षडयंन्त्र के विषय में बताते हुए लेखक कहते हैं कि किस प्रकार राम से सहानुभूति पाने के लिए वह झूठा अभिनय करती है ,''आप जानते ही होंगे कि रावण ने अपने हाथों मेरे पति की हत्या कर दी थी , शूर्पणखा ने सुबकी लेने का अभिनय किया , ''क्योंकि विद्युज्जिहव ने कभी उसकी अधिनता स्वीकार नहीं की। आप ही बताइए , कोई स्त्री अपने पति के हथियारे को स्नेह की दृष्टि से कैसे देख सकती है , चाहे वह उसका अपना सगा भाई ही क्यों न हो...! शूर्पणखा को लगा , उसको अपनी पीड़ा का अभिनय , यथार्थ से एकाकार होता जा रहा है।''[9]

श्री राम के पूछने पर कि यदि भविष्य में कभी रावण से उसका युद्ध होता है तो वह क्या करेंगी । वह कहती हैं–'' मैं तुम्हें रावण की वीरता , उसकी सेना , उसके शस्त्रों का एक–एक भेद बताऊँगी। उसकी व्यूह रचना को खंड–खंड कर दूँगी और अपने हाथों से तुम्हें लंका के सिंहासन पर बैठाकर तुम्हारा राज्यभिषेक करूंगी....''[10]

पृष्ठभूमि नामक उपन्यास के क्रम में लेखक ने बाली के अत्याचार , सुग्रीव के साथ विद्रोह , राम सुग्रीव की मित्रता, बाली–वध आदि प्रसंगों का मार्मिक चित्रण किया है। शिक्षा संस्कार को उच्च मानते हुए किष्किन्धा में शिक्षण संस्थान बनाने की पहल होती है जो आधुनिक शिक्षा के महत्व को दर्शाते है ,''सुग्रीव बोले , किष्किन्धा के सभी मदिरालय और वेश्यालय आज से बन्द कर दिए जाएं उन भवनों तथा उनके साथ की भूमि को शिक्षा–विभाग के अधीन कर दिया जाए। यदि इसके पश्चात् भी अतिरिक्त धन की आवश्यकता हो , तो वह राजकोष से दिया जाए।''[11]

वह अपने समस्त राज्य को मदिरा मुक्त बनाना चाहते हैं जिससे सुन्दर राज्य का निर्माण हो सके। वह मदिरा और वेश्यावृति को राज्य के पतन का कारण मानते हैं। वह कहते हैं कि,'' वेश्या और मदिरा मनुष्य की नैसर्गिक आवश्यकताएं नहीं हैं। इनकी आवश्यकता धनाढ्य जन को होती है , जिन्हें जीवन में श्रम नहीं करना पड़ता। सुख–सुविधाओं और धन का बाहुल्य उनमें मानसिक विकृतियाँ पैदा कर देता है या उन निर्धनों को होती है, जिनके अपने जीवन में शोषण है सुख नहीं।''[12]

अभियान राम कथा श्रृंखला की षष्ठ कड़ी है। जिसके अन्तर्गत लेखक ने वानर सेना की मदद से सीता की खोज का सुन्दर वर्णन किया है। वानर सेना के स्वाभाविक गुणों का वर्णन करते हुए कोहली जी कहते हैं कि,'' लौटते हुए खोजियों के दल की सहायता कुछ सार्थक दिखाई पड़ी थी। सफल काम होने के कारण, उन लोगों में उत्साह भी पर्याप्त था। गति में क्षिप्रता भी रही थी और भूख प्यास की बात भी अधिक नहीं हुई थी। किन्तु किष्किन्धा के निकट पहुँचते–पहुँचते वानरों में अधर्य और थकावट के लक्षण प्रकट होने लगे थे। अगंद , हनुमान और जाम्बवान किसी–न–किसी प्रकार सारे दल को आगे धकियाते चल रहे थे।''[13]

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 79-81 , ISSN 2348 – 3318
अन्जु शर्मा
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

प्रस्तुत कथा–माला की अन्तिम कड़ी युद्ध है। जिसके अन्तर्गत लेखक ने पीड़ित मानव के अन्याय और अत्याचार से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष का रोमांचक चित्रण किया है। युद्ध भूमि में राम–रावण युद्ध का सुन्दर वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं कि,''रावण की चेतना पर छाई विषाद की काई फट गई। उसके मन में क्रौध ही क्रौध था। युद्ध–विद्या, युद्ध कौशल और युद्ध की मर्यादा जैसे वह भूलता जा रहा था। कंगले राजकुमार उसके सामने भूमि पर खड़े थे। नंगे पांव मिटट्ीपर खड़े थे। किन्तु उनके हाथ बंधे नहीं थे और वे शस्त्र–बद्ध थे। वे याचना नहीं, प्रहार कर रहे थे.... रावण ने पहली बार अपने क्रौध के साथ–साथ एक पीड़ा का भी अनुभव किया। जिन्हें सदा अत्यन्त नीच, हीन और दुर्बल माना जाता था वे उसके सामने युद्ध में समानता के अधिकार से डटे ही नहीं थे, उस पर कहीं अपने अस्तित्व के लिए युद्ध करते दिखाई पड़ रही थी और वानर सेना सर्वग्रासीसागर के समान बची–खुची सेना को लीलने के लिए, अपना भयंकर मुख खाले आगे बढ़ती आ रही थी।''[14]

उर्पयुक्त विवेचन एवं उद्धहरणों से यह स्पष्ट होता है कि राम–कथा का गद्य माध्यम से प्रस्तुतीकरण वास्तव में डॉ0 कोहली जी की एक अद्भुत खोज है जिससे उन्हें समाज में अकल्पनीय लोकप्रियता प्राप्त हुई है। डॉ0 भगवतीशरण मिश्रा जी के शब्दों में ''उन्होंने अपनी इस कृति में रामायण की कथा को यथावत प्रस्तुत नहीं किया हैं। प्रथम तो यह कि इसे चमत्कारों से रहित रखा गया है। श्रम एवं संगठन की बात करें तो पारम्परिक रामायणों में ऋषि विश्वामित्र के आश्रम को अकेले राम–लक्ष्मण ने राक्षसों के उत्पात से मुक्ति दिला दी थी किन्तु डॉ0 कोहली की कृति में ऋषि विश्वामित्र स्वयं राम संगठन व आत्मबल पर ज़ोर देते है।''[15] राम–कथा पर आधारित होने पर भी इनकी कृति आज की समसामयिक समस्याओं के इर्द–गिर्द घूमती प्रतीत होती है जो वास्तव में आधुनिक चेतना से सम्बद्ध है न कि युगों पुरानी पौराणिक संचेतना से।

सन्दर्भ

1. नरेन्द्र कोहली : दीक्षा , पृ0–10
2. वही , पृ0–11
3. वही , पृ0–23
4. वही , पृ0–36
5. वही , पृ0–38
6. नरेन्द्र कोहली : अवसर , पृ0–28
7. वही , पृ0–29
8. नरेन्द्र कोहली : संघर्ष की ओर , पृ0–8
9. नरेन्द्र कोहली : साक्षात्कार , पृ0– 63
10. वही , पृ0–65
11. नरेन्द्र कोहली : पृष्ठभूमि , पृ0–37
12. वही , पृ0–38
13. नरेन्द्र कोहली : अभियान पृ0–71
14. नरेन्द्र कोहली : युद्ध , पृ0–153
15. डॉ0 भगवतीशरण मिश्र : हिन्दी के चर्चित उपन्यासकार , पृ0–323